SHABDBRAHM E-ISSN: 3049 4230
VOLUME 1, ISSUE 2, OCTOBER 2025

भारत के विलीनीकरण में सरदार पटेल का योगदान

डॉ. शिल्पा कामलिया

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

नलिनी अरविंद एंड टी. वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज, वल्लभ विद्यानगर,

जिला - आणंद, गुजरात

सरदार पटेल का जन्म 31 अक्तूबर, 1875 को नड़ियाद में अपनी ननसाल में हुआ था । उनके पिता का नाम झाबेर भाई तथा माता का नाम लाड़बाई था । लाड़बाई झावेर भाई की दूसरी पत्नी थीं। पिता स्वामीनारायण संप्रदाय के भक्त थे और घर-गृहस्थी तथा खेती-बाड़ी के काम में कोई दिलचस्पी नहीं लेते थे ।

जीवन के उत्तरकाल में उनका अधिकांश समय मंदिर में बीतता था । उनकी मृत्यु 85 वर्ष की आयु में मार्च 1914 में हुई थी । "सरदार पटेल के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल था--1947 से 1950 तक का काल । देशी राज्यों का एकीकरण उनकी महत्तम उपलब्धि थी । डॉ. राजेन्द्रप्रसाद का यह कहना सार्थक है कि "यदि आज एक ऐसे भारत का अस्तित्व है, जिसके बारे में हम सोचते और बात करते हैं, तो इसका अधिकतर श्रेय सरदार पटेल को है। फिर भी हम उन्हें प्रायः भूल जाते हैं ।"(1)

- **विलीनीकरण की पृष्ठभूमि एवं जटिल चुनौतियाँ**

    • ब्रिटिश सर्वोच्चता का अंत और रियासतों की मानसिकता

ब्रिटिश शासन के अधीन, रियासतों के आंतरिक मामलों में सीमित स्वायत्तता थी, लेकिन वे ब्रिटिश क्राउन के प्रति निष्ठावान थीं। सर्वोच्चता समाप्त होते ही, शासकों, जैसे महाराजा, नवाब और राजा, ने अपनी सदियों पुरानी संप्रभुता को पुनः प्राप्त करने का स्वप्न देखा। वे अपनी शक्ति, विशेषाधिकार और पैतृक रियासतों को खोना नहीं चाहते थे। त्रावणकोर (Travancore), भोपाल, हैदराबाद और कश्मीर जैसे प्रमुख राज्यों ने खुलकर स्वतंत्रता बनाए रखने की इच्छा व्यक्त की, जिससे केंद्र सरकार के लिए गंभीर संकट खड़ा हो गया। "असंगत भाषण या

SHABDBRAHM

अव्यवस्थित कार्य सहन-शक्ति या स्वार्थ त्याग की शक्ति के द्योतक नहीं हैं। कुरबानी के क्षणिक जोश में बहकर स्वेच्छा से प्रांणों की आहुति दे देने में बहादुरी जरूर है। लेकिन किसी भी प्रकार की दलबन्दी में पड़े बिना अज्ञात रहकर अखंड परिश्रम और अनुशासन का सेवामय जीवन बिताने में अधिक बहादुरी है। क्षणिक जोश में आकर की जाने वाली कुरबानियों की आज हमें जरूरत नहीं है; हमें जरूरत है नित्य-निरंतर दुःख उठाकर, त्यागमय जीवन बिताकर किए जाने वालो कामों की ।"(2

• **भौगोलिक और राजनीतिक समस्याएँ**

रियासतें न केवल संख्या में अधिक थीं, बल्कि वे भौगोलिक रूप से पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में बिखरी हुई थीं । कई रियासतें मुख्य भारतीय भूभाग के मध्य में स्थित थीं । यदि ये स्वतंत्र रहतीं, तो वे 'राज्यों के भीतर राज्य' (States within States) बन जातीं, जिससे संचार, परिवहन, व्यापार और यहाँ तक कि नागरिक प्रशासन भी अस्त-व्यस्त हो जाता ।

SHABDBRAHM

इसके अलावा, शासकों की महत्वाकांक्षाएँ, जैसे त्रावणकोर के दीवान सी.पी. रामास्वामी अय्यर का स्वतंत्र राष्ट्र बनाने का इरादा, भारत के लिए एक बड़ा राजनीतिक खतरा था। "देश के लगभग एक-तिहाई हिस्से में फैली 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में एकीकरण सचमुच बहुत बड़ा काम था। यह चमत्कार करके भरदार ने अपने लिए 'भारतीय बिस्मार्क' की उपाधि अर्जित की थी।"(3)

• **पाकिस्तान का हस्तक्षेप और सांप्रदायिक तनाव**

कुछ रियासतें, विशेष रूप से जूनागढ़ और भोपाल, पाकिस्तान से प्रेरित थीं या उन्होंने पाकिस्तान में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की । यह विभाजन के बाद पहले से ही भयंकर सांप्रदायिक तनाव से जूझ रहे भारत के लिए एक अतिरिक्त सुरक्षा खतरा था।

पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना ने इन शासकों को भारत के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रोत्साहित किया। "जिन्ना ने हिन्दुओं को मुसलमानों से घृणा करना सिखाया

और मुसलमानों को हिंदुओं से। 1937 तक जिन्ना पढ़े-लिखे हिंदुओं को बहुत प्रिय थे। वे जिन्ना के धर्मोनरपेक्ष विचारों और राष्ट्रीय उद्देश्यों के प्रति उनके समर्पण के प्रशंसक थे। कवयित्री-राजनेता सरोजिनी नायडू ने उन्हें हिंदू-मुस्लिम एकता का सर्वश्रेष्ठ राजदूत कहा था। पर सत्ता के लालच में जिन्ना ने वह सब-कुछ त्याग दिया, जो उन्होंने चार दशकों में कमाया था।"(4)

- **निर्णायक संघर्ष: लौह पुरुष का पराक्रम**
- जूनागढ़: जनमत की जीत (जनमत संग्रह)

जूनागढ़, गुजरात के तट पर एक हिंदू-बहुल रियासत थी, जिसका नवाब मुहम्मद महाबत खान III था। नवाब ने 15 अगस्त, 1947 को पाकिस्तान में शामिल होने की घोषणा कर दी, जबकि रियासत की 80% से अधिक जनता हिंदू थी।

पटेल की कार्रवाई:

SHABDBRAHM

पटेल ने इसे भारत की सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा माना। उन्होंने तर्क दिया कि भौगोलिक रूप से भारत से घिरी हुई रियासत का पाकिस्तान में शामिल होना 'अस्वाभाविक' है। उन्होंने रियासत की जनता के विद्रोह 'आरज़ी हुकुमत' (Arzi Hukumat) को समर्थन दिया।

परिणाम:

जब कानून-व्यवस्था पूरी तरह से बिगड़ गई, तो नवाब परिवार के साथ कराची भाग गया। भारत सरकार ने नवंबर 1947 में प्रशासनिक नियंत्रण संभाला और फरवरी 1948 में जनमत संग्रह (Plebiscite) कराया गया, जहाँ लगभग 99% लोगों ने भारत में विलय के पक्ष में मतदान किया। पटेल ने यहाँ लोकतंत्र और जनभावना के सिद्धांत को स्थापित किया।

- **जम्मू और कश्मीर: विलय-पत्र पर सशर्त हस्ताक्षर**

जम्मू और कश्मीर का मामला सबसे जटिल था। महाराजा हरि सिंह ने शुरू में भारत या पाकिस्तान किसी में भी शामिल न होने का फैसला किया था।

संकट: अक्टूबर 1947 में, पाकिस्तान समर्थित कबायलियों ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया।

सरदार पटेल की भूमिका: महाराजा हरि सिंह ने भारत से सैन्य मदद मांगी। पटेल ने तुरंत सेना भेजने पर सहमति व्यक्त की, लेकिन इससे पहले 26 अक्टूबर, 1947 को महाराजा को विलय-पत्र (Instrument of Accession) पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया गया। पटेल ने स्पष्ट कर दिया कि बिना कानूनी विलय के भारतीय सेना हस्तक्षेप नहीं कर सकती। हालांकि, इस मामले को बाद में संयुक्त राष्ट्र ले जाया गया, जिससे यह एक जटिल अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया।

- **आलोचना एवं मूल्यांकन**

सरदार पटेल की रणनीति की आलोचना कभी-कभी उनकी कठोरता (विशेष रूप से हैदराबाद में सैन्य हस्तक्षेप) और प्रिवी पर्स की पेशकश को लेकर की जाती है, जिसे बाद में इंदिरा गांधी ने समाप्त कर दिया था ।

हालांकि, व्यापक मूल्यांकन में यह स्पष्ट है कि सरदार पटेल की नीति 'राष्ट्र प्रथम' की नीति थी। रियासतों का विलय यदि शांतिपूर्वक और शीघ्रता से न किया जाता, तो भारत को एक दीर्घकालिक राजनीतिक और आर्थिक अराजकता का सामना करना पड़ता। प्रिवी पर्स एक छोटी कीमत थी जो उन्होंने रियासतों के शासकों को जल्दी से राजी करने के लिए चुकाई, जिससे देश को बड़े संघर्ष और विखंडन से बचाया जा सका। उनका कार्य व्यावहारिक, दूरदर्शी और राष्ट्र के लिए पूरी तरह समर्पित था ।

"हरेक पक्ष को पटेल तोलता,
हरेक भेद को पटेल तोलता,
दुराव या छिपाव से उसे गरज ?
कठोर नग्न सत्य वह बोलता !
पटेल हिंद की निडर जबान है ।"(5)

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि सरदार वल्लभभाई पटेल का भारत के विलीनीकरण में योगदान भारतीय इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। उन्होंने राजनीतिक खंडहरों के बीच

SHABDBRAHM

से एक एकीकृत और सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण किया। उनकी दृढ़ता ने 565 से अधिक राज्यों को एक साथ लाने के लगभग असंभव कार्य को संभव बनाया। वह केवल एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि वह एक स्टेट्समैन (Statesman) थे, जिन्होंने अनुशासन, कूटनीति और आवश्यकतानुसार बल के उपयोग से एक भौगोलिक संकल्पना को एक राजनीतिक वास्तविकता में बदल दिया।

सरदार पटेल की विरासत हमें सिखाती है कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता किसी भी कीमत पर सर्वोपरि होनी चाहिए। वह सही मायने में 'अखंड भारत के वास्तुकार' और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं, जिन्होंने भारतीय राष्ट्र को वह आकार दिया, जिसे हम आज जानते हैं और जिस पर गर्व करते हैं।

संदर्भ सूची

1. सरदार वल्लभभाई पटेल : व्यक्तित्व और विचार, विश्वप्रकाश गुप्त,मोहिनी गुप्ता, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्र. सं- 1999, प्रस्तावना से

2. वही, पृ - 171

3. सरदार पटेल तथा भारतीय मुसलमान, रफीक जकारिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1998, पृ - 49

4. वही, पृ - 86

5. सरदार : राष्ट्रीय संवादिता के सर्जक, सं - रमेश एम. त्रिवेदी, चारुतर विद्यामंडल वल्लभ विद्यानगर, प्र. सं. 2002, पृ - 26

SHABDBRAHM